अभ्यास

1. क. तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहि न पान।
   कहि रहीम पर काज हित, संपति सँयहि सुजान।।

   ख. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
   पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

   ग. रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
   जहां काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।।

   घ. निंदक नियरे रखिए, आँगन कुटी छवाय।
   बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

2. क. बड़ेन हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
   ख. निंदक नियरे रखिए, आँगन, कुटी छवाय।
   ग. कहे कबीर हरि पाइए, मन ही की परतीत।
   घ. बानी ऐसी बोलिए, मन का आपा खोए।
   ङ. कहि रहीम पर काज हित, संपत्ति संचहि सुजान।
   च. रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजिए डारि।

3. क. सही
   ख. सही
   ग. सही
   घ. सही
   ड. गलत
   च. सही
   छ. सही

4. क. माता-पिता - स्नेह
   ख. शिक्षक - ज्ञान (द्वारा सभ्य व सुशिक्षित बनाना)
   ग. किसान - अन्न
   घ. सैनिक - समय (रक्षा के लिए)
   ड़. कलाकार - मनोरंजन/आनंद
   च. चिकित्सक - ज्ञान (द्वारा रोगों से मुक्ति)

5. क. खजूर - दूर
   ख. डारि - तलवारि
   ग. जीत - परतीत
   घ. खोय - होय
   ड. छवाय - सुभाय
   च. पान - सुजान

Scanned by CamScanner

6. क. राहगीर - यात्री
   ख. पराजय - हार
   ग. पेड़ - वृक्ष
   घ. स्वच्छ - साफ
   ड. छोटा - तुच्छ
   च. काम - कार्य

7. क. न राहगीर को छाया मिलती है और फल भी बहुत दूर लगते हैं।
   ख. पेड़ अपने फल स्वयं नहीं खाते और सरोवर अपना जल स्वयं नहीं पीता।
   ग. जो हमारी निंदा करते हैं, उन्हें हमेशा अपने पास ही रखना चाहिए।
   घ. यदि मनुष्य मन में हार गया-निराश हो गया तो पराजय है और यदि उसने मन को जीत लिया तो वह विजेता है।
   ड. दूसरों को सुख पहुँचाती ही है, इसके साथ ही खुद को भी बड़े आनंद का अनुभव होता है।
   च. जहाँ सुई की आवश्यकता होती है, वहाँ तलवार काम नहीं आती।

8. क. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
   कहे कबीर हरि पाइए, मन ही की परतीत।।
   ख. बानी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोय।
   औरन को सीतल करे, आपहु सीतल होय।।

9. खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने से कोई लाभ नहीं है। जो न तो छाँव दे पाता है और न ही उसके फल सुलभ होते हैं।

   जीवन में जय पराजय केवल मन की भावनाएँ हैं। यदि मनुष्य मन में हार गया या निराश हो गया तो पराजय है और यदि मन को जीत लिया तो वह विजेता है। ईश्वर को भी मन के विश्वास से ही पा सकते हैं।

   कबीर जी के इस दोहे से यह शिक्षा मिलती है कि जो व्यक्ति हमारी निंदा करता है, उसे अपने पास ही रखना चाहिए क्योंकि वह तो बिना साबुन और पानी के हमारी कमियाँ बताकर हमारे स्वभाव को साफ कर देता है।

   रहीम जी के इस दोहे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हर चीज के महत्व को समझना चाहिए क्योंकि अलग-अलग चीजों का अपना अलग महत्व होता है। उदाहरण के लिए जहाँ सुई का प्रयोग किया जाना है, वहाँ तलवार क्या काम आएगी।

   रहीम दास जी के इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें सबसे मीठी बोली बोलनी चाहिए। जिसे सुनकर दूसरों को खुशी मिले और उसके अंदर सकारात्मक भाव पैदा हो।

   रहीम दास जी के इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें सदैव दूसरों की भलाई के लिए तत्पर रहना चाहिए और जरूरतमंद लोगों की सेवा करनी चाहिए तभी हम एक अच्छे इंसान कहलाएँगे।

   विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

10. मेरे जन्मदिन आने वाला था। मेरे पापा ने मुझसे पूछा कि तुम्हें जन्मदिन पर क्या उपहार चाहिए। मैंने अपने पापा से कहा कि मुझे जन्मदिन पर स्कूटी चाहिए। मेरे पापा ने मुझे समझाया कि अभी तुम छोटे हो, तुम्हारी उमर स्कूटी चलाने की नहीं है। मैं तुम्हें जन्मदिन पर साइकिल लेकर दे देता हूँ। मैंने स्कूटी के लालच में साइकिल लेने से मना कर दिया। मेरे पापा ने न साइकिल लेकर दी, न ही स्कूटी लेकर दी। इस तरह मैंने लालच में दोनों को खो दिया।

    विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

11. निंदा करने वाला व्यक्ति हमारी कमियों को दूर करने में सहायक होता है। आज के युग में शिक्षा, नौकरी, खेल, व्यवसाय,

Scanned by CamScanner

रह-सहन इत्यादि में हर जगह प्रतिस्पर्धा है। प्रत्येक व्यक्ति अच्छे बुरे की परवाह किए बिना दूसरों से आगे बढ़ना चाहता है। ऐसे में उसे लगता है कि वह जो कर रहा है, वही सही है। यदि कोई व्यक्ति हमें हमारी गलतियों का अहसास करवाता है और हमें हमारे दोष बताता है। वह हमें सही रास्ते पर ले जाना चाहता है।

विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

12. पंथी - राहगीर

परतीत - दृढ़ निश्चय

सरवर - तालाब

परकाज - दूसरों के काम

निर्मल - साफ

विदयार्थियों दवारा बनाए गए वाक्य अलग-अलग हो सकते हैं।

13. सफलता के मार्ग पर कदम बढ़ाते-बढ़ाते व्यक्ति अचानक सफलता का प्रयास करना छोड़ देता है। इसका एक मात्र कारण उसका हिम्मत हारना होता है, पहले तो उसे सफलता का मार्ग कठिन लगता है, दूसरा व्यक्ति के मन में दुर्बलता या कमज़ोरी आ जाती है। लक्ष्य मार्ग का कठिन होना या सरल होना-यह तो किसी व्यक्ति के हाथ में नहीं होता, समय और परिस्थितियों के वश ही आदमी को कोई कार्य कठिन या सरल लगता है। एक व्यक्ति अपनी आत्मिक शक्ति को दृढ़ बनाकर अपने कठिन मार्ग को भी सुगम बना लेता है, कमज़ोर इच्छा शक्ति वाले व्यक्ति को तो आसान काम भी मुश्किल लगने लगता है।

विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

14. मैं सारा दिन अपने दोस्तों के साथ खेलता रहता था। पढ़ाई की तरफ मेरा बिलकुल भी ध्यान नहीं था। एक बार मेरे परीक्षा में बहुत ही कम नंबर आए, मेरे अध्यापिका ने मेरा रिपोर्ट कार्ड मेरे पापा को दिया और उन्हें बताया कि मेरे बहुत ही कम नंबर आए हैं। मेरे पापा ने घर वापस आकर मुझे बहुत डाँटा। उन्होंने यहाँ तक कहा कि यदि तुम्हें नहीं पढ़ना तो स्कूल जाने की जरूरत नहीं। मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया। उस दिन के बाद से मैं पढ़ाई के समय पढ़ता हूँ और खेल के समय खेलते हूँ।

विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

15. विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

16. धन संपदा के अतिरिक्त ज्ञान ऐसा धन है, जिसे जोड़ा जा सकता है। सभी धन नष्ट हो जाते हैं, परंतु ज्ञान रूपी धन कभी नष्ट नहीं होतां। ज्ञान ही ऐसा धन है, जो कही भी किसी अवस्था और किसी काल में मनुष्य का साथ नहीं छोड़ता। ज्ञान हमें जीवन में हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में सहायक होता है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, व्यपार हो या नौकरी हो।

विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

17. विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

Scanned by CamScanner